



प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- स्थायी कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए)
- इस माह के कृषि उद्यमी: डॉ. रविंदर रेड्डी, हैदराबाद
- इस माह का संस्थान: एसएमजीजीएस-वाराणसी, उत्तर प्रदेश
- एसएमईटीआई-केरल के अधिकारियों का महाराष्ट्र अध्ययन सह प्रदर्शन दौरा

कृषिउद्यमी की मुफ्त
हेल्पलाइन का उपयोग करें
1800-425-1556

“ कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतक, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

ई-बुलेटिन

कृषिउद्यमी



प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड – VIII अंक –II

मई, 2016

स्थायी कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए)

एनएमएसए की संरचना मुख्यतः मृदा एवं जल संरक्षण, जल उपयोग दक्षता, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और वर्षा से सिंचित क्षेत्र के विकास पर अधिक बल देते हुये स्थायी कृषि से संबन्धित सभी चालू और नव प्रस्तावित गतिविधियों/कार्यक्रमों के अभिसरित, एकीकृत और सम्मिलित कर के की गयी है। एनएमएसए का ध्यान समुदाय आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से आम जनता के संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है। कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एनएमएसए के पास चार महत्वपूर्ण घटक या गतिविधियाँ हैं जैसे वर्षाजल से सिंचित क्षेत्रों का विकास (आरएडी), खेतों में जल प्रबंधन (ओएफडबल्यूएम), मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन



(एसएचएम), जलवायु परिवर्तन और स्थायी कृषि: मोनिट्रिंग, मॉडलिंग एंड नेटवर्किंग (सीसीएसएमएमएम)। एनएमएसए के 4 महत्वपूर्ण घटकों में से मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन(एसएचएम) सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है। एसएचएम नई मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं (एसटीएलएस) की स्थापना को प्रोत्साहित करता है ताकि रासायनिक उर्वरकों का संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग किया जा सके। 12 वीं पाँचवर्षीय योजना के दौरान, देश में 100 नए अचल/चल एसटीएल स्थापित करने का प्रस्ताव है। कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग नए अचल/चल एसटीएल की स्थापना के लिए मशिन और उपकरणों की खरीदी, रसायन और काँच के बर्तन, विविध प्रयोगशाला वस्तुएँ एवं आकस्मिक व्यय हेतु परियोजना लागत का 75% जिसकी सीमा रु.56 लाख तक हो को सब्सिडी के रूप में देगा। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि एटोमिक ऐबसोरप्शन स्पेक्ट्रोस्कोपी (एएएस) से लैस यह एसटीएल एनपीके और सूक्ष्मपोषक तत्वों की प्रस्तुति के लिए प्रति वर्ष 10000 मृदा नमूनों की जांच कर सकता है। इसी प्रकार, एमएसटीएल की क्षमता 5000 नमूने प्रति वर्ष है, जिसका बेहतर उपयोग किया जाना चाहिए। सामान्य रूप से मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएँ राज्य सरकार द्वारा राज्य की एजेंसियों की सहायता से स्थापित की जाती हैं। यह आशा की जा रही है कि भारत में मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं को मजबूत बनाने के लिए राज्य सरकार अन्य एजेंसियों जैसे कृषि विस्तारण से संबन्धित निजी एजेंसियाँ जैसे उर्वरक कंपनी, एग्री-क्लीनिक, एनजीओ, सहकारिता समितियों और निजी उद्यमियों (कृषि-उद्यमी) की भागीदारी को बढ़ावा देगा। अतः, कृषिउद्यमियों से इस योजना का प्रयोग करने तथा वेबसाइट: <http://nmsa.dac.gov.in>.



राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान,



कृषि सहयोग और कृषि किसान कल्याण मंत्रालय



राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

लेयर कुक्कुट-पालन के राजा

“एक उद्यमी बनने का सबसे सफल तरीका है जल का परीक्षण करो और फिर अपने पैर गीले करो” यह कहना है हैदराबाद के 46 वर्षीय डॉ. रविंदर रेड्डी का जिन्होंने एक कुक्कुट-पालन कृषि उद्यमी बनने के लिए एक प्रसिद्ध निजी फर्म में अपनी उच्च वेतनभोगी नौकरी छोड़कर छलांग लगा दी। डॉ. रवींद्र रेड्डी जो कुक्कुट-पालन विज्ञान में डॉक्टरेट है और कुक्कुट-पालन के क्षेत्र में 12 वर्षों का अनुभव है ने इस क्षेत्र में उत्तीर्ण होने और कुक्कुट-पालन कृषकों को गुणवत्ता की सेवा प्रदान के दो उद्देश्यों से स्वयं को इस क्षेत्र में कृषिउद्यमी के रूप में स्थापित करने का निश्चय लिया। डॉ. रवींद्र रेड्डी जिन्हें मैनेज द्वारा पूरे देश में बेरोजगार कृषि-पेशेवरों के लिए चलाये जा रहे एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नेस केंद्र योजना के विषय में पता चला, उन्होंने पार्टीसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट इनिशियेटिव (पीआरआईडीएस), हैदराबाद में 2004 के दौरान एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम में दाखिला लिया। अनिवार्य 2 महीने के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौर से गुजरने के बाद उन्होंने बैंक ऑफ महाराष्ट्र, हैदराबाद से रु. 10 लाख का आरंभिक बैंक ऋण प्राप्त किया और नाबार्ड से 36% सब्सिडी भी प्राप्त की जो उनके कुक्कुट-पालन से संबन्धित वेंचर, रेड्डी अनुसंधान प्रयोगशाला (आरआर लेब्स) की स्थापना की योजना का एक अंतर्निहित घटक है। आज, डॉ. रविंदर रेड्डी का आरआर लेब्स जाना-माना कुक्कुट-पालन वेंचर है। उनका कहना है कि, “विनम्र कौशल विकास, विभिन्न तकनीकी विषय, बाज़ार सर्वेक्षण, आदि से युक्त एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण मॉड्यूल ने मुझे अपने व्यावसायिक वेंचर में अच्छे लाभ प्राप्त करने और अपनी परामर्श सेवाओं के लिए कृषक समुदाय में सर्वश्रेष्ठ पहचान प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास के साथ अग्रसर होने में मदद की”। कृषक परिवार से होने के कारण, डॉ. रविंदर रेड्डी के पास 24 एकड़ जमीन है जिसमें उन्होंने अनुसंधान प्रयोगशाला (ब्रोइलर और लेयर) और कुक्कुट-पालन खाद्य एकक शुरू किया है। तीन छपरो में, प्रत्येक की 36000 की पोषण क्षमता में चूजे, ब्रोइलर और लेयर अलग रखे गए हैं। वें कृषकों द्वारा स्थापित लगभग 50-60 व्यवस्थित निजी कुक्कुट-पालन फार्म (ब्रोइलर और लेयर) को अपनी विस्तारण सेवाएँ प्रदान करते हैं और उनके गाँव तथा आस-पास के क्षेत्रों में 3500-4000 कृषकों को परामर्श भी प्रदान करते हैं। 10 लाख रुपए से शुरू हुआ आर.आर.लेब्स का आज वार्षिक कारोबार रु. 15 करोड़ है। वें 30 जिलों में कृषकों को विस्तारण सेवाएँ प्रदान करने के अलावा 56 लोगों को लाभकारी ढंग से और पूर्णकालिक रोजगार प्रदान करने में सक्षम है। वें उत्तर-पूर्व, असम, उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि में फर्टाइल अंडों की मांग को भी पूरा करते हैं।



डॉ. रविंदर रेड्डी उनके लेयर कुक्कुट-पालन फार्म में



कृषक की आवाज़

कोथुर ग्राम के श्री. श्रीनिवास रेड्डी का कहना है कि, “मेरे पिताजी साइकल में खेत के चक्कर लगाते थे। अब हम कार में लगाते हैं”। डॉ. रविंदर रेड्डी के नेतृत्व में, मैंने 3500 पक्षियों से आरंभ किया था और अब मैं 1.50 लाख पक्षियों का पालन कर रहा हूँ। कुक्कुट-पालन हमारी आय का मुख्य स्रोत है।

डॉ. रविंदर रेड्डी

आर.आर. लेब्स, कोथुर ग्राम, हैदराबाद शहर, तेलंगाना राज्य, मोबाइल सं. +91 9849645584

ईमेल: rr_labs@yahoo.co.in

श्री. शैलेंद्र प्रताप सिंह,
नोडल अधिकारी



एनटीआई का नाम: श्री. माँ गुरु
ग्रामोद्योग संस्थान
(एसएमजीजीएस) वाराणसी, उत्तर
प्रदेश

पता: एसएच-15/144-के, शिवपुर,
सैक्टर-ए, जीवन दीप स्कूल के
पीछे, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मोबाइल सं.: 09919802325

ईमेल:
smggs.acabc@gmail.com

प्रशिक्षण की सं.: 128

प्रशिक्षित अभ्यर्थियों की सं.: 4271

स्थापित वेंचरों की सं.: 2435

सफलता का दर: 57.01%

स्थापित एग्रीवेंचर: फार्म निवेशों
का ग्रामीण विपणन, जैव-नियंत्रण
एकक का उत्पादन, कुक्कुट पालन,
मत्स्यपालन, बकरी पालन, बीज
प्रक्रमण एकक, कृषकों परामर्श
कार्य, दूध एकत्रण केंद्र, सजावटी

सहकारिता से समस्या का हल ढूँढने की ओर

“कृषकों के बहुमुखी विकास में एग्रीक्लीनिक एवं एग्रीबिजनेस केन्द्रों का योगदान : वर्तमान परिदृश्य और भविष्य योजनाएँ” पर एक दिवसीय कार्यशाला ने उत्तर प्रदेश के 54 जिलों के 160 स्थापित कृषि उद्यमियों को साथ लाया। श्री.रामगोपाल मोहाले, वाराणसी के महापौर ने 10 अप्रैल, 2016 को श्री माँ गुरु ग्रामोद्योग संस्थान (एसएमजीजीएस) वाराणसी, उत्तर प्रदेश में इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। प्रो. आर. सी. तिवारी (विभाग के पूर्व अध्यक्ष) मृदा विज्ञान, बीएचयू, उत्तर प्रदेश, डॉ. डी. आर. भारद्वाज (प्रमुख वैज्ञानिक), आईआईवीआर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश और श्री. लालाजी पाठक (पूर्व जिला बागबानी अधिकारी), वाराणसी, उत्तर प्रदेश सम्मानीय अतिथि थे जिन्होंने इस समारोह में भाग लिया। इस कार्यशाला ने प्रत्येक कृषिउद्यमी को

एग्री-बिजनेस एवं विस्तारण सेवाएँ, चुनौतियाँ और क्रेडिट लिंकेज के मुद्दे, सब्सिडी देने में देरी आदि के संदर्भ में अपना केस प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। कृषि उद्यमियों ने महापौर और अन्य विशिष्ट अतिथियों को समझाया कि हालांकि एसी एवं एबीसी प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों के तहत दिये गए ऋण को गैर-निष्पादित परिसम्पत्ति (एनपीए) के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है, फिर भी बैंक कृषिउद्यमियों को ऋण देने में संकोच कर रहे हैं और सहयोग नहीं दे रहे हैं जिसके दबाव में आकर कई कृषिउद्यमियों को एग्री-वेंचर छोड़ना पड़ा और आय के अलग स्रोत को ढूँढना पड़ा। कृषिउद्यमियों ने आए हुये माननीय अतिथियों से इस विषय को भारत के माननीय प्रधानमंत्री तक ले जाने का अनुरोध किया। कृषिउद्यमियों ने यह भी मत रखा कि

प्रधानमंत्री की 'ग्राम उदय से भारत उदय' की विचारधारा उत्तर प्रदेश में ग्राम स्तर पर विस्तारण सहित कृषि – उद्यमवृत्ति के विकास द्वारा सच हो सकती है। श्री. शैलेंद्र प्रताप सिंह, एसएमजीजीएस, वाराणसी के नोडल अधिकारी ने एसी एवं एबीसी योजना की प्रगति को रेखांकित किया। बैंकों के नकारात्मक दृष्टिकोण के बावजूद, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि संस्थान ने प्रशिक्षित अभ्यर्थियों को एग्री-वेंचर स्थापित करने, बैंक से ऋण और अन्य विषयों के संबंध में हमेशा सहयोग दिया है। श्री. रामगोपाल मोहाले, महापौर, वाराणसी ने कृषिउद्यमियों द्वारा ग्राम स्तर पर दी जा रही विस्तारण सेवाओं की प्रशंसा की। श्री.मोहाले ने आश्वासन दिया कि इस योजना के संदर्भ में सूचना राज्य के मुख्यमंत्री एवं भारत के प्रधानमंत्री तक पहुंचाई जाएगी। उन्होंने यह भी वचन दिया कि प्रत्येक प्रशिक्षित कृषिउद्यमी को सहायता प्रदान की जाएगी ताकि कृषकों का चहुंमुखी विकास किया जा सके। श्री. भरत सिंह, प्रशिक्षण समन्वयक, एसएमजीजीएस, वाराणसी ने धन्यवाद ज्ञापन द्वारा कार्यशाला का समापन किया।



एसी एवं एबीसी योजना के तहत केरल के अधिकारियों का अध्ययन सह प्रदर्शन दौरा

एसएएमईटीआई-केरल ने मैनेज का सहयोगी बन एसी एवं एबीसी योजना के भाग के रूप में केरल राज्य में एनटीआई बनने में दिलचस्पी दिखाई। राज्य में एसी एवं एबीसी योजना को मजबूत करने हेतु सक्रिय दृष्टिकोण के तहत, मैनेज ने केरल राज्य कृषि विभाग के 6 अधिकारियों को एसी एवं एबीसी की कार्य पद्धति और क्षेत्रीय स्तर व्यावहारिक मुद्दों सहित इसके पहलुओं को समझने के लिए 16 से 21 फरवरी 2016 के दौरान महाराष्ट्र का दौरा आयोजित किया। दौरे के दौरान अधिकारियों ने महाराष्ट्र के विभिन्न एनटीआई के नोडल अधिकारियों से बात की और इस योजना के सफल आयोजन के संदर्भ में उनके अनुभव से जानकारी प्राप्त की।

अधिकारियों ने इस योजना के काम-काज और उद्देश्य के संदर्भ में व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करने के लिए पुणे और उसके आस-पास की जगहों के सफल कृषि उद्यमियों से मुलाकात की। अपने अनुभव को अधिक बढ़ाने के लिए उन्होंने पुणे के केवीके बारामती, अभिनव कृषक क्लब और बागवानी प्रशिक्षण केंद्र का भी दौरा किया। इस योजना और उसके कामकाज के प्रशंसात्मक, अधिकारियों ने अपने दौरे के अंत में केरल राज्य में एसी एवं एबीसी योजना को नया बनाने के लिए समयबद्ध कार्यबिन्दु बनाकर प्रस्तुत किया।



महाराष्ट्र के स्थापित एग्रीबैंचर में एसएएमईटीआई-केरल के अधिकारी

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है। यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।



कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),

राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज,) राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत

ई-मेल: indianagripeneur@manage.gov.in

“कृषि उद्यमी” श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।

मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज

संपादक : डॉ. पी. चन्द्रशेखर, निदेशक (कृषि विस्तार), डॉ. सरवनन राज निदेशक (कृषि विस्तार)

सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे

हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली

अधिक प्रश्नों हेतु, कृपया indianagripeneur@manage.gov.in पर संपर्क करें।